Hf – शांति नहीं, बल्कि विभाजन लूका १२:४९-५३ | 1

– Save This Page as a PDF–

शांति नहीं, बल्कि विभाजन

लूका १२:४९-५३

खुदाई: यीशु किस आग की बात कर रहे हैं? क्या बपतिस्मा? कैसा विभाजन? यीशु विभाजन कैसे लाते हैं? जब ईसा मसीह शिशु थे तो इसकी भविष्यवाणी किसने की थी? कब? कहाँ? इसका लूका १२:३१-३४ से क्या संबंध है? आप इसका इस तथ्य से कैसे सामंजस्य बिठा सकते हैं कि वह शांति लाता है? ये छंद कैसे संकेत दे सकते हैं कि कैसे भीड़ ने मसीहा को “गलत तरीके से पढ़ा”?

चिंतन: येशुआ आपके परिवार और दोस्तों के लिए क्या लेकर आया है: विभाजन या शांति? मसीहा में अपने विश्वास के परिणामस्वरूप आपको व्यक्तिगत रूप से कैसे कष्ट सहना पड़ा है? क्या आपका तलाक हो गया है? क्या आपको अपने परिवार से बहिष्कृत कर दिया गया है? क्या आपने अपने विश्वास के कारण मित्रों को खो दिया है? क्या आपने नौकरी खो दी है या काम पर सताया गया है? आप उसे कैसे संभालते हैं? क्या आपको लगता है कि परमेश्वर का नाम आपके कार्यों के माध्यम से महिमामंडित किया गया था, या कीचड़ में घसीटा गया था?

यीशु अपने मसीहाई मिशन की प्रकृति को और स्पष्ट करते हैं और अपने आंतरिक प्रेरितों को चेतावनी देते हैं कि क्या अपेक्षा की जाए। मसीहा ने उन्हें समझाया कि उनकी शिक्षा अनिवार्य रूप से विरोध को भड़काती है और विभाजन आएगा। कुछ ऐसे थे जो उस पर विश्वास करते थे और कुछ ऐसे थे जो उसे अस्वीकार करते थे। यह अप्रत्याशित नहीं था।

मसीह इस तथ्य पर जोर देते हैं कि वह पृथ्वी पर
पवित्रता की परिष्कृत आग लाने के लिए आए थे (लूका १२:४९ए)। यूनानी पाठ में अग्नि सशक्त स्थिति में है; सचमुच, आग मैं लाने आया हूँ। एक जलती हुई, शुद्ध करने वाली,

Hf – शांति नहीं, बल्कि विभाजन लूका १२:४९-५३ | 2

जीवन देने वाली संदेश की आग, उनके शिष्यों और अन्य शिष्यों के दिलों में एक अदम्य उत्साह की आग, रुआच हाकोडेश की आग, और पृथ्वी पर पाप के खिलाफ न्याय की अंतिम आग (यशायाह ६६:२४; मलाकी ३:२-३; प्रथम कुरिन्थियों ३:१३-१५; प्रकाशितवाक्य १९:२०, २०:१४-१५)। सारा न्याय उसके हाथों में सौंपा गया था। और पिता ने उसे न्याय करने का अधिकार दिया है क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है (यूहन्ना ५:२७)।

और मैं कैसे चाहता हूँ कि पवित्र आत्मा की अग्नि पहले ही प्रज्वलित हो (लूका १२:४९बी)! तथ्य-से-विपरीत स्थिति के लिए व्याकरणिक निर्माण से संकेत मिलता है कि येशुआ अपने मिशन को पूरा करने के लिए उत्सुक था, जो उस समय अधूरा था। जैसा कि शिमोन ने वर्षों पहले भविष्यवाणी की थी (देखें Au – मंदिर में प्रस्तुत यीशु), धार्मिकता के पुत्र को इसराइल में कई लोगों के पतन और उत्थान का कारण बनना था, और एक संकेत बनना था जिसके खिलाफ बात की जाएगी (लूका २:३४)। उसी तरह, दूसरा आगमन विश्वासियों के लिए पुरस्कार लाएगा, लेकिन पश्चाताप न करने वालों के लिए न्याय भी लाएगा (प्रकाशितवाक्य एफओ – महान श्वेत सिंहासन निर्णय पर मेरी टिप्पणी देखें)।

लेकिन मुझे बपतिस्मा लेना है (लूका १२:५०ए)। इस रूपक को समझने की कुंजी मरकुस १०:३८-३९ में एक समानांतर मार्ग में पाई जाती है, जहां यीशु को जो प्याला पीना था वह उनके मिशन और मृत्यु को पूरा करने के उनके उत्साह को दर्शाता है: क्या आप वह प्याला पी सकते हैं जिसे मैं पीता हूं और उससे बपतिस्मा ले सकता हूं मैं किस बपतिस्मा से बपतिस्मा ले रहा हूँ? इस बपतिस्मा में येशुआ की पापी मानव जाति के साथ पूर्ण पहचान शामिल थी जिसमें वह हमारे पापों और हमारी सजा को सहन करता है। हम सब भेड़ों की नाईं भटक गए; हम में से हर एक अपनी अपनी राह पर चला गया; तौभी एडोनाई ने हम सब का दोष उस पर डाल दिया। इस प्रकार, वह हमारे पापों के लिए बलिदान बन जाता है, अपना जीवन त्याग देता है और खुद को मृत्यु में डुबो देता है, वध के लिए मेमने की तरह हमारे पापों के लिए हमें मृत्युदंड देता है (यशायाह ५३:६-७ सीजेबी)।

मेरे सामने पीड़ा का एक भयानक बपतिस्मा है, और जब तक यह पूरा नहीं हो जाता, मैं भारी बोझ के नीचे हूँ (लूका १२:५० बी एनएलटी)! ईश्वर की इच्छा के प्रति प्रभु की प्रतिबद्धता संपूर्ण थी। वह अपना बपतिस्मा पूरा करने के लिए पूरी तरह से जुनूनी था, भले ही इसका मतलब यरूशलेम में मृत्यु का सामना करना था (लूका १३:३२-३३)। धार्मिकता का पुत्र अपने बपतिस्मा की लालसा रखता था, बावजूद इसके कि इसमें क्या शामिल था, क्योंकि केवल इसके पूरा होने से ही आग भड़क उठेगी। मसीहा की मृत्यु को यहाँ किसी त्रासदी या भाग्य के भयानक मोड़ के रूप में नहीं बल्कि ईश्वरीय योजना की पूर्ति के रूप में देखा जाता है।

Hf – शांति नहीं, बल्कि विभाजन लूका १२:४९-५३ | 3

कुछ लोग यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि चूँकि
मसीह ने इस्राएल राष्ट्र को एकजुट नहीं किया, इसलिए वह मसीहा नहीं था। लेकिन प्रभु का उत्तर होगा: क्या आपको लगता है कि मैं पृथ्वी पर शांति लाने आया हूँ? नहीं, मैं तुमसे कहता हूं, लेकिन विभाजन। येशुआ को अपने पहले आगमन पर महिमा के साथ शासन नहीं करना है; वह उस समय विश्व शांति की मसीहा संबंधी भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए नहीं है: वे अपनी तलवारों को पीटकर हल के फाल बना देंगे और अपने भालों को कांटों में बदल देंगे। राष्ट्र, राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा, न ही वे अब युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेंगे (यशायाह २:४)। इस कारण वह फूट डालेगा। हमारे उद्धारकर्ता के कारण यहूदी और अन्यजाति दोनों परिवार विभाजित हो गए हैं और वफादारियाँ टूट गई हैं। यहूदी विश्वासियों को अभी भी उनके परिवारों और दोस्तों से बहिष्कृत किया जाता है यदि वे मानते हैं कि येशुआ मसीहा है। लेकिन उनका शिष्य बनने के लिए हमें लागतों की गणना करनी होगी।

कुछ लोग उसे मेशियाक के रूप में स्वीकार करेंगे, जबकि अन्य नहीं करेंगे, ताकि इस मुद्दे पर परिवार बीच में ही विभाजित हो जाएं (मती १०:३४-३९)। अब से इसका मतलब है कि विभाजन यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद शुरू नहीं हुआ था, बल्कि पहले ही शुरू हो चुका था, एक परिवार में पांच लोग एक-दूसरे के खिलाफ बंटे होंगे, तीन दो के खिलाफ और दो तीन के खिलाफ। फिर येशुआ ने मीका ७:६ से उद्धरण दिया, और आने वाले विभाजन के विशिष्ट उदाहरण दिए: वे विभाजित होंगे, पिता पुत्र के विरुद्ध और पुत्र पिता के विरुद्ध, माँ बेटी के विरुद्ध और बेटी माँ के विरुद्ध, सास बहू के विरुद्ध। और बहू सास के विरूद्ध है (लूका १२:५१-५३)। वहाँ प्रेरितों के सामने काम, प्रतीक्षा और परीक्षण की अवधि थी। मालिक उन्हें इसके लिए तैयार करेंगे।

आग और विभाजन। पवित्रशास्त्र के एक संक्षिप्त अंश में दो शक्तिशाली छवियाँ पैक की गई हैं। कभी-कभी, परमेश्वर की करुणा पर सवाल न उठाना मुश्किल हो सकता है जब वह ऐसी अंधेरी छवियों के माध्यम से हमसे बात करता है। हमारे पिता के पास स्पष्ट रूप से हमारे जीवन में लाने के लिए प्रचुर मात्रा में शांति और एकता है, लेकिन जब हम अपने विश्वास में दृढ़ रहते हैं, तब भी कई बार हमें कलह और असहमति का सामना करना पड़ सकता है – यहां तक कि हमारे अपने परिवारों के भीतर भी।

एक दिन जब मसीहा ने पहाड़ पर उपदेश दिया (देखें Da – पर्वत पर उपदेश), येशुआ ने

Hf – शांति नहीं, बल्कि विभाजन लूका १२:४९-५३ | 4

अपने शिष्यों से कहा कि पहले ईश्वर के राज्य की तलाश करें, और “बाकी” आपको भी दिया जाएगा (मती ६: ३३)। लेकिन “बाकी” हमेशा समस्याओं के बिना जीवन नहीं होता है। हमारी दुनिया की स्थिति को देखते हुए, पूरी तरह से लापरवाह अस्तित्व की उम्मीद करना अवास्तविक है। तो फिर वह क्या है, जो हमें भी दिया जाएगा? यह इब्रानियों १२ में किया गया वादा है, यीशु मसीह में अनुशासन और अनुग्रह का जीवन। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारी स्थिति कैसी है, हम भरोसा कर सकते हैं कि यीशु हमेशा हमारे साथ हैं, इस दुनिया में हमारे सामने आने वाली कठिनाइयों से निपटने में हमारी मदद कर रहे हैं: अपने दिलों को परेशान न होने दें। . . यह मैं ने तुम से इसलिये कहा है, कि तुम मुझ में शान्ति पाओ। इस धरती पर आपको कई परीक्षण और दुःख होंगे। परन्तु ढाढ़स बांधो, क्योंकि मैं ने जगत पर जय पाई है (यूहन्ना १४:१ और १६:३३ एनएलटी)।

जब उसने उस आग के बारे में बात की जिसके बारे में वह चाहता था कि वह पहले से ही जल रही हो तो यीशु पवित्र आत्मा के बारे में बात कर रहा था जो हर विश्वासी के दिल को भरने के लिए उसके बाद आने वाला था। जिन विभाजनों के बारे में उन्होंने बात की, वे एडोनाई का विरोध करने वाले लोगों या विचारधाराओं को संदर्भित करते थे, और जो लोग ईश्वर का विरोध करते थे उन्हें उनके राज्य से कैसे अलग किया जाएगा। आस्था का संदेश लोगों और उनके रिश्तों को चुनौती देता है, यहां तक कि हमारे परिवारों में पाए जाने वाले प्यार के सबसे मजबूत बंधन को भी चुनौती देता है।

इन चुनौतियों के सामने, हमें उन लोगों को कैसे जवाब देना चाहिए जो परमेश्वर के वचन से सहमत नहीं हैं? हमें सुसमाचार की सच्चाई बोलने में कभी भी अनिच्छुक नहीं होना चाहिए। हमें प्रभु की शुद्ध करने वाली, कभी न बुझने वाली आग से डरने के लिए नहीं बुलाया गया है। आइए हम उत्सुकता से उसके वचन के साथ-साथ रुआच हाकोडेश की विभाजनकारी तलवार को भी गले लगाएं क्योंकि वह गेहूं को भूसी से अलग करने के लिए तेजी से आगे बढ़ता है (लूका ३:१७)।

प्रभु यीशु, हम अभी स्वयं को आपके प्रति समर्पित करते हैं। चाहे कुछ भी कीमत चुकानी पड़े, हम आपके रास्ते पर चलना चाहते हैं, इस दुनिया के रास्ते पर नहीं। आमीन। वह योग्य है।